उपसंहार

उपसंहार

रांगेय राघव का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक एवं श्लिष्ट था। राघव जी का परिवार सुसम्पन्न तथा सुसंस्कृत था। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में डा. कमलाकर गंगावणे, अशोक शास्त्री आदि लोगों ने बहुत सी जानकारी देने की चेष्टा की है। राघव जी के बचपन में उनके माता-पिता, भाई तथा सेवक श्रवणकुमार आदि के उनपर संस्कार हुए। डा. राघव जी अत्याधिक परिश्रमी थे। उनमें अठारह घंटे निरंतर कार्य करने की क्षमता थी। राघव जी पर मार्क्सवाद का प्रभाव था। उनकी रचनाओं में इसका परिचय मिलता है। राघव जी अपने परिवार की प्रेरणा से एक महान व्यक्ति बन गये। राघव जी ने 19-20 वर्ष की अवस्था में अकालग्रस्त बंगाल पर रिपोतार्ज लिखा। सही रूप से उनका लेखन कार्य सन 1938 ई. के बाद ही देखने को मिलता है। उनका पहला कहानी संग्रह `साम्राज्य का वैभव` द्वितीय विश्वयुद्ध एवं रूस की क्रान्ति पर आधारित है। सन 1948 में उनका प्रथम मौलिक उपन्यास `घरौंदे` प्रकाशित हुआ। तब से निरंतर लेखन, चिंतन, अनुचिंतन उनके साहित्यकार की प्रवृत्ति बनी रही। राघव जी ने करीबन 150 रचनाओं का अंबार रचकर अपनी मेधावी प्रतिभा का प्रत्यय दिया। साहित्य का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जिसे उनकी लेखनी ने स्पर्श न किया हो। सृजनात्मक साहित्य के क्षेत्र में काव्य, नाटक, निबंध, रिपोर्ताज, आलोचना, शोधग्रंथ, उपन्यास, कहानियाँ, अभिजात कृतियों का अनुवाद जैसे अनेक क्षेत्र में लिखकर उन्होंने अपने समग्र साहित्यिक व्यक्तित्व को सिद्ध किया। साहित्य के अलावा समाजशास्त्र, इतिहास, विज्ञान के क्षेत्र में भी लेखनी चलाई। प्रंतु उनके लेखनिय व्यक्तित्व की मूल प्रवृत्ति एक सर्जक और विचारक की रही।

डा. रांगेय राघव का दृष्टिकोण प्रगतिशील था। आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों में प्रेमचन्द जी के बाद रांगेय राघव जी का स्थान शीर्षस्थ है। वे एक मात्र ऐसे साहित्यकार है, जिनकी दृष्टि नए से नए अछूते क्षेत्र पर रहती थी और वे उसे पूरी सूक्ष्मता के साथ अपनी कहानियों में उतार लेते थे। उनका रहन-सहन बिल्कुल सीधा-सादा था। वे चेनस्मोकर एवं अनिद्रा के रोगी थे। सन 1948 में आगरा विश्वविद्यालय से पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात कोई नौकरी न करके अध्ययन एवं लेखन को ही राघव जी ने अपना जीवन समर्पित कर दिया।

डा. रांगेय राघव जी ने अनेक विधाओं का निर्माण किया है। उन्होंने पच्चासी ही कहानियाँ लिखी है। यह कहानियाँ सम्पादक अशोक शास्त्री ने `रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-1, व 2 ` में संकलित की है। इन दो भागों का आधार लेकर उनकी कहानियों का सामान्य परिचय द्वितीय अध्याय में दिया है। रांगेय राघव जी की कहानियों में विविध प्रकार के पात्रों को स्थान देकर कहानी को महान बनाने की चेष्टा की है। उनकी कहानियों पर मार्क्सवाद का प्रभाव दिखाई देता है। उनकी कहानियाँ निम्न, उपेक्षित एवं गलीज समझे जानेवाले लोगों के जीवन से संबंधित है। दक्षिण भारतीय सामाजिक परिवेश से भी संबंधित उन्होंने कहानियाँ लिखी है। उन्होंने प्रगतिशील दृष्टिकोण से जीवन के यथार्थ को अपनी कहानियों में उठाया है। वे शिल्प के साथ ही विषय-वस्तु के चुनाव में भी प्रयोगशील है। उनका कथाकार अछूते पात्रों, उपेक्षित जीवन खंडो एवं अनलिखे कथानकों को खोजकर हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है।

रांगेय राघव जी की कहानियों में चित्रित विविध समस्याओं का अध्ययन इस शोध-प्रबन्ध के तृतीय अध्याय में किया गया है। रांगेय राघव जी ने अपनी कहानियों में विविध समस्याओं को स्थान दिया है। सामाजिक, आर्थिक, शोषितों की, साम्प्रदायिकता और शरणार्थियों की समस्याएँ आदि समस्याओं का दर्शन इनके कहानियों में हुआ है। सामाजिक समस्याओं के अन्तर्गत पति-पत्नी के बनते बिगड़ते संबंध, अंधश्रद्धा, वासनाग्रस्तता, भ्रष्टाचार, व्यसनांधता, रिश्तों का खोखलापन, नारी उपभोग का साधन , प्रेम आदि का विवेचन किया है। समाज के साथ मानव का दृढ नाता है। उस नाते को तोड़कर वह जी नहीं सकता। मनुष्य को समाज के ही सहारे जीना पड़ता है। सामाजिक बन्धनों को उसे पालना ही पड़ता है। पति-पत्नी , पिता-पुत्र, भाई-भाई इनके बीच संघर्ष होता है। इस संघर्ष के कारण अनेक सामाजिक समस्याएँ निर्माण होती है।ऐसी विविध समस्याओं को राघव जी ने अपनी कहानियों में स्थान दिया है। हिन्दू तथा मुस्लिम धर्म के लोगों में अब तक जो अन्धश्रद्धाएँ दिखाई देती है उसका चित्रण इसमें किया है। परम्परा से चलते आये रिति-रिवाज इस अन्धश्रद्धा के कारण हो चुके है, अनुपयोगी रिवाजों को छोड़ देना ही मनुष्य को फायदेमंद साबित होगा। समाज में छिपी हुई वासनाग्रस्तता की समस्या का चित्रण किया है जो समाज में आदर्श के पुतले है उनके ही हाथ इस वासना से गंदे हो गये है, ऐसे लोगों का राघव जी ने पर्दाफाश किया है। आधुनिक युग में रूपया शिष्टाचार का प्रतिक माना जा रहा है। किसी भी दफ्तर में

अपना काम करना हो तो भ्रष्टाचार के सहारे तुरंत किया जाता है। भ्रष्टाचार तो कुछ आदमी खून की हर बूँद में दिखाई देता है। भ्रष्टाचार न करनेवाले बहुत से गिने-चुने ही लोग मिलेंगे। लेकिन उनको भी भ्रष्टाचारी बनाने का कार्य किया जाता है। रांगेय राघव जी की एक कहानी में मैजिस्ट्रेट के दफ्तर में चलनेवाले भ्रष्टाचार का चित्रण है। भ्रष्टाचार से दूर रहनेवाले को भ्रष्टाचार करने के लिए किस प्रकार विवश किया जाता है और वह भ्रष्टाचारी होता है। प्रेम ही ईश्वर का रूप है। प्रेमी किसी पर भी किसी समय में भी किया जाता है। इसी प्रेम के कारण जो समस्याएँ उपस्थित हुई है उसका चित्रण राघवजी ने किया है।

अन्य समस्याओं के अन्तर्गत आर्थिक समस्याएँ, शोषितों की समस्याएँ, साम्प्रदायिकता की समस्याएँ और शरणार्थियों की समस्यएँ आदि समस्याएँ राघवजी की कहानियों में देखने को मिलती है। आर्थिक समस्याओं के कारण मानव की उन्नति में बाधा निर्माण होती है। मानव की आर्थिक स्थिति अगर ठिक हो तो वह सही राह पर चलेगा। आर्थिक स्थिति के कारण उसे अनेक समस्याओं का सानना करना पड़ता है। मनुष्य के पास धन-सम्पत्ती न होगी तब वह सही रास्ता छोडकर गलत रास्ते से चलता है। मजदूर, निम्न वर्ग इन्हें आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। राघवजी ने ऐसे वर्गों मे से आर्थिक समस्याओं का चित्रण किया है। आर्थिक समस्याओं के साथ ही शोषितों की समस्याएँ भी महत्त्वपूर्ण है। जिसके अन्तर्गत मजूदरों पर मालिक का अत्याचार, पुलिसों का, जमीदारों का निम्न जाति पर होनेवाले अत्याचार और दहशत आदि का समावेश होता है। हिन्दू-मुस्लिम धर्म के अन्तर्गत होनेवाले संघर्ष का चित्रण साम्प्रदायिकता की समस्याएँ के अन्तर्गत किया है। अदालत में पनपती साम्प्रदायिकता, समाज में पनपती कटु धार्मिकता तथा अंधी समाज व्यवस्था आदि का विवेचन किया है। देश को आजादी मिली और विभाजन हुआ। इस भारतपाक विभाजन के कारण अनेक शरणार्थी भारत आए। यहाँ उनको अनेक समस्याओं का सामना करना पडा। इसका विवेचन शरणार्थियों की समस्याएँ के अन्तर्गत किया है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत रांगेय राघव जी की कहानियों की विशेषताएँ जो देखने को मिलती है उनका विवेचन किया है। राघव जी ने अपनी रचनाओं में अनेक नये और पुराने विषयों को स्थान देकर अपनी कहानियों को महान बनाने का कार्य किया है। राघव जी की कहानियों में अनेक विशेषताएँ मिलती है। उनमें सामाजिक आदर्श, मजदूर और किसानों का संघर्ष, अन्धविश्वास एवं रूढि परम्परा, यथार्थ, झूठ और पाखण्ड , प्रेम आदि विशेषताओं का दर्शन राघव जी की अनेक कहानियों में होता है।

राघव जी ने अपनी कहानी साहित्य में नये नये अछूते विषयों को यथार्थता के साथ लाने की चेष्टा की है। उनकी कहानियाँ पुरानी कहानियों की तर अति मानवीय, अस्वाभाविक एवं अविश्वसनीय नहीं है। उनका संबंध जीवन के यथार्थ से होता है, भले ही यह यथार्थ सामाजिक न होकर वैयक्तिक हो। इसप्रकार उनकी सभी कहानियाँ सोद्देश्यपूर्ण है।

अंतिम पाँचवा अध्याय रांगेय राघव का हिन्दी कहानी साहित्य में योगदान है। इस अध्याय में रांगेय राघव पूर्व हिन्दी कहानी के अन्तर्गत कहानीकार प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेन्द्रकुमार, चतुरसेन शास्त्री आदिओं की कहानी कला की स्थिति का जायजा लिया है। राघव जी के समकालीन लेखक उपेन्द्रनाथ `अश्क`, अज्ञेय, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, अमृतराय, भगवतीचरण वर्मा आदि कहानी लेखकों के कहानियों की स्थिति को कैनवास में रखा है। राघव जी की कहानियों का अलगपन इसमें कहानियों के अलगपन की स्थिति दिखाई है। हिन्दी कहानी में राघव जी ने अलग ढंग से कहानी लिखी, यह उनका कहानी साहित्य में योगदान है इसको भी रेखांकित किया है।

रांगेय राघव जी की कहानियों का अनुशीलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात जो उपलब्धियाँ सामने आती है वे इस प्रकार है -

1. राघव जी ने सामाजिक व्यवस्था में साफ-सुथरापन एवं सुधार की आवश्यकताओं का प्रतिपादन करते हुए भारतीय परिवर्तित मानसिकता पर ह्रदय परिवर्तन की भावना से काम किया। तात्पर्य यह कि संवेदनाहीन समाज में संवेदना जगाने का प्रयत्न किया।

2. आजादी के बाद देश में फैली हुई धांधली, कामुक और स्वार्थी व्यवस्था में निम्न और मध्यवर्ग की दर्शनाक जिंदगी को व्यक्त करते हुए राघव जी निम्न और मध्य वर्ग को सचेत रहने का आवाहन करते है।

3. राघव जी का कहानी साहित्य मार्क्सवादी विचारों पर आधारित है।

4. केवल अपने ही सुख की चिन्ता करनेवाले पूँजीपती मजदूरों का खून चुसकर अपनी तिजोरियाँ भरते है। लेकीन अन्याय और अत्याचार का एक दिन अंत हो जाता है। मजदूर हडताल करते है। लेखक

गरीब मजबूर मजदूरों को अन्याय और अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने की प्रेरणा देते है।

5. आज से पैंतालिस साल पहले लिखी हुई कहानियों की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है, इसका दर्शन कही ना कही होता है। यह इस कहानियों की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

रांगेय राघव के कृतित्व पर निम्न दिशाओं में अनुसंधान किया जा सकता है -

1. रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्ध।
2. रांगेय राघव की कहानियों में चित्रित नारी जीवन।
3. रांगेय राघव के कहानी-साहित्य में प्रतिबिम्बित समाज जीवन।

****